ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 50 कुल पृष्ठ-8 19 से 25 अक्टूबर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. शु.-05

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी संन्यासी सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के पूर्व प्रधान एवं वैदिक विरक्त मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) की तपःस्थली दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश का

वार्षिकोत्सव एवं 23 वाँ दुर्लभ शारद यज्ञ 16 अक्टूबर, 2023 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता की

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य रहे विशिष्ट अतिथि

आचार्य महावीर सिंह ने किया सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन

गत् 12 से 14 अक्टूबर, 2023 को चम्बा का वार्षिक समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में वार्षिकोत्सव एवं शारद यज्ञ का पूरा कार्यक्रम संचालित हुआ। कार्यक्रम का संयोजन दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष आचार्य महावीर सिंह जी ने किया तथा शारद यज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी सुशोभित किया। यज्ञ के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त सर्वश्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी मंत्री सार्वदेशिक सभा, स्वामी आदित्यवेश जी महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी देवानन्द जी सरस्वती, आचार्य अंशुदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, छत्तीसगढ़ आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही और प्रवचन भी सुनने को मिले। इनके अतिरिक्त स्वामी संतोषानन्द जी, स्वामी व्रतानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी निर्भयानन्द जी, स्वामी सुमित्रानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द व स्वामी वेदानन्द जी व महात्मा धर्ममुनि वानप्रस्थी आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। युवा भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र आर्य एवं ओजस्वी युवा गायक एवं छत्तीसगढ़ आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री ऋषिराज आर्य, श्री मधुरम आर्य अमृतसर, बहन सरस्वती आर्या, श्री संजय शास्त्री, श्री सुनील शास्त्री, श्री मनोज कुमार जी शास्त्री (सभी मठ के स्नातक) एवं श्रीमती नीतू आर्या के भजनों का भी कार्यक्रम बीच-बीच में होता रहा। यज्ञ में वेदपाठ का दायित्व हरी एवं लोभी राम तथा अजय एवं अक्षय और रमेश चन्द्र शास्त्री एवं पंकज शास्त्री (छत्तीसगढ़) ने कुशलता के साथ निभाया।

12 अक्टूबर को दयानन्द मठ चम्बा एवं महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय का वार्षिक समारोह प्रारम्भ हुआ और 14 अक्टूबर तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से चलता रहा।

इस अवसर पर आचार्य महावीर सिंह जी ने विद्यालय की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हमारा उद्देश्य बच्चों का निर्माण करना है, जिससे यही बच्चे देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकें। यहाँ पर पढ़ रहे बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी दिये जाते हैं। छात्र एवं छात्राओं को वेद पाठ तथा वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करने की विशेष शिक्षा एवं प्रेरणा दी जाती है जिस कारण से वे बड़े सुन्दर ढंग से वेद पाठ कर पाते हैं। प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले शारद यज्ञ का विशेष प्रभाव विद्यालय के बच्चों पर पड़ता है। इस प्रकार के आयोजन से बच्चों में प्राचीन वैदिक संस्कृति के प्रति आकर्षण पैदा होता है।

महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय, दयानन्द मठ चम्बा का स्थान हिमाचल प्रदेश के विशेष विद्यालयों में गिना जाता है। कार्यक्रम के उपरान्त सभी अतिथियों, अविभावकों एवं उपस्थित गणमान्य महानुभावों के लिए सुन्दर जलपान की व्यवस्था की गई थी।

15 अक्टूबर, 2023 को प्रातः 6.30 बजे से 16 अक्टूबर, 2023 प्रातः 10 बजे तक दुर्लभ शारद यज्ञ चला। निरन्तर चलने वाले इस विशेष यज्ञ में समुचित मात्रा में शुद्ध घृत एवं सामग्री का प्रयोग हुआ। 28 घण्टे निरन्तर चलने वाले इस यज्ञ में सैकड़ों स्त्री-पुरुषों ने आहुतियाँ प्रदान की। ऋग्वेद के आधार पर यह दुर्लभ शारद यज्ञ राष्ट्र में वीरता, पौरुष एवं स्वाभिमान को बढ़ाने की भावना से किया जाता है। यज्ञ के दौरान बीच-बीच में यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य विद्वानों के व्याख्यान तथा भजनीकों के भजन भी नियमित होते रहे और 16 अक्टूबर, 2023 को प्रातः 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

शेष पृष्ठ - 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेद का आदेश

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

यह सिद्धान्त सर्वविदित है कि संसार में वेद सबसे पुराने ग्रन्थ हैं और वैदिक धर्मी वेदों का प्रादुर्भाव आदि सृष्टि में मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ ही मानते हैं।

ईश्वर ने मनुष्यों के उपयोग के लिए जहाँ नाना प्रकार की वस्तुएँ रचीं वहाँ उन वस्तुओं का उचित उपयोग और व्यवहार बताने के लिए ऋषियों के हृदय में ज्ञान भी प्रेरित किया और उन ऋषियों का संसार में रहन-सहन और पदार्थ के उपयोग और व्यवहार का निर्देश इसी ईश्वर प्रेरित ज्ञान वेद के आधार पर किया।

जिस समय ऋषियों ने वेदों का सन्देश और आदेश मनुष्यों को सुनाया उस समय सब मनुष्य एक ही स्थान पर रहते थे। देश विदेश और अनेक जातियों में मनुष्य बंटे नहीं थे। भाषा भी उस समय सब की एक ही थी और वह भाषा है वेदों की भाषा।

आदि सृष्टि में भगवान ने मनुष्य को कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ मन और बुद्धि प्रदान की तो मनुष्य को स्वभावाभिव्यक्ति करने के लिए भाषा ईश्वर ने ही मनुष्य को प्रदान की। वेद का अभिमत है :-

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयंदधानाः।

(ऋग्वेद 10/71/1)

महान संसार के पालक प्रभु ने प्रथम नाम धारण करने वाली वाणियाँ प्रेरित की।

अब मनुष्य के लिए वेदों का आदेश क्या है यह सुनिए -

प्रत्येक मनुष्य सहृदय बने। सहृदय उसे कहते हैं कि अन्य के कष्टों को अनुभव करें। किसी भी प्राणी को कष्ट में देखकर मनुष्य के हृदय में दर्द उत्पन्न हो।

सामंजस्य का आशय है कि सबके मनों में सामंजस्य हो। सबके अधिकारों की रक्षा हो। सबके मनों में संतोष हो सके ऐसी बात होनी चाहिए। एक दो व्यक्तियों के ही मन की न होना चाहिए। परस्पर द्वेष नहीं होना चाहिए। एक दूसरे के वैभव विकास को देखकर कुढ़े नहीं। और एक-दूसरे को इस प्रकार प्रेम करें जैसा गौ अपने सद्यजात वत्स का करती है।

1. सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।

(अथर्ववेद 3/30/1)

उपर्युक्त मंत्र में जो सामाजिक शिक्षा दी गई है वह कुटुम्ब पर नगर पर और देश पर लागू होती है। मनुष्य मात्र के लिए समान है। बिना सहृदयता के मनुष्य पशु से भी गिरा हुआ है।

यथा ''मनुष्य रूपेण वृकाश्चरन्ति'' हृदयहीन सहानुभूति शून्य मनुष्य तो मानव रूप में भेड़िया है। यदि समाज में यह एकाकी गुण जाग्रत हो जाए तो सारा भ्रष्टाचार, कालुष्य और कष्ट दूर हो जाये। सहृदयता जन्म जात भी होती है और उसका आधान काव्य शास्त्रों की शिक्षा द्वारा भी किया जा सकता है।

मनों में समझौता रहे, अपने साथ दूसरे के हितों का भी ध्यान रहे यह सब शिक्षा के द्वारा ही सम्पाद न हो सकता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इसमें बड़ी सहायक थीं। बचपन से ही विद्यार्थी समूह में रहना सीखते थे। भोजन छादन, रहन-सहन सब सामूहिक होता था, वैयक्तिक नहीं। इसलिए मनों में सामंजस्य रखने का स्वभाव बन जाता था। इस प्रकार आचरणात्मक शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति सर्वथा समाजवादी बन जाता था। समाजवाद उसकी आदत बन जाती थी।

द्वेष रहित यदि सब हो जाएँ और एक-दूसरे से जलें नहीं तो सबका ही कल्याण है। जलने वाला दूसरे को हानि पहुँचाने की धुन में अपनी तो हानि पहले ही कर डालता है। परोन्नति को देखकर दुःखी होना अपने ऊपर व्यर्थ का दुःख लादना है। कर्मफल विश्वासी मनुष्य कभी दूसरे को देखकर नहीं जल सकता। और कर्म फल विश्वास आदि का अभ्यास होता है आर्यदर्शन, उपनिषद् गीतादि के निरन्तर स्वाध्याय से। द्वेषरहित होने के लिए सभी को मन पर जमे हुए कषायों का निवारण करना होगा। यह काम बिना साधना के नहीं हो सकता। वह साधना है धर्माचरण। वैदिक धर्म आचरणात्मक धर्म है केवल विश्वासात्मक नहीं। सब मनुष्य एक-दूसरे को प्यार करें। यह सब तब हो सकता है कि विश्व भर की राजनीति एक हो। राजनैतिक बाजीगरों ने कहीं राष्ट्रीयता के नाम पर, कहीं मत सम्प्रदायों के नाम पर, कहीं संस्कृति के नाम पर, कहीं भाषा के नाम पर मनुष्यों में द्वेष बुद्धि भड़का रखी है वेद कहता है :

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसम् नानाधर्माणं पृथिवीं यथौकसम्॥ (अथर्व. 12/1/45)

पृथिवी अनेक भाषाओं वालों और अनेक धर्म वाले जनों को यथास्थान धारण करती है। आदि सृष्टि में अनेक भाषाएँ और धर्म नहीं थे फिर वेद ने ऐसा क्यों कहा?कारण है कि उच्चारण और ध्वनि भेद तो प्रत्येक मनुष्य को एक भाषा में भी भिन्न कर देता है। इसी भेद से मनुष्य बोली से पहचान लिया जाता है। धर्म भी गुण, कर्म, स्वभाव के कारण कामों की योग्यता में भेद के कारण भिन्न हो जाते है।। सब मनुष्य एक ही सा उच्चारण करें, एक सा ही सोचें विचारें यह असम्भव है। अतः वेद भगवान् सहिष्णुता का आदेश देते है। भिन्नत्व में भी एकत्व की दृष्टि रखने की शिक्षा देते है। वैदिक अध्यात्म में दृढ़ श्रद्धा से प्राणिमात्र में प्रेम की बुद्धि बन जाती है। वेद का उपदेश है :-

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद् विजानतः,
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः। (यजुर्वेद, 40/7)

अर्थ - जब ज्ञानी सब प्राणियों को आत्मवत् जानने लगता है तब कैसा मोह कैसा शोक। वह सब को एक ही तत्व (जड़ और चेतन जानता है) ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान भी बिना स्वाध्याय, सत्संग और साधना के नहीं हो सकता। यह है वेदों की समाज व्यवस्था। वर्णाश्रम विभागों में रहते हुए भी आत्म दृष्टया सब को एक मानकर सबका हित करना। भिन्न वर्तित्व में समदायित्व होना चाहिए। समवर्तित्व से तो अनाचार फैल सकता है। माता, पत्नी, बहिन में बर्ताव सम नहीं हो सकता। कुत्ते और मनुष्य साथ-साथ नहीं खा सकते।

अर्थ व्यवस्था - प्रत्येक व्यक्ति का पुरुषार्थ और बुद्धि भिन्न-भिन्न शक्ति रखता है। अतः सबकी कमाई में भेद होगा ही। परन्तु ''शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर'' वेद ने आदेश दिया कि सौ हाथों से कमाओं और सहस्त्र में बांटो। दान का उपदेश देकर वेदों ने आर्थिक सामंजस्य स्थापित कर दिया। दान देने से दानी की वृत्ति में उदात्तता आती है और प्रति गृहीता के चित्त में कृतज्ञता उपजती है। दोनों गुण मानवता के विकास के लिए परमोपयोगी हैं। कानून द्वारा किसी का माल छीनकर किसी को देने से माल वाले के हृदय में क्षोभ, क्रोध और वैमनस्य की भावना उदित होगी और लेने वाले में अभिमान, कठोरता और प्रमाद बढ़ेगा। आज कानूनों द्वारा यही राक्षसी भाव प्रकट होते हैं। दानादि धर्मों द्वारा जो कोमल भावनाएँ बनती थीं वे नष्ट हो रही हैं। वेद ने जिस विषय में समत्व की आवश्यकता थी वह भी बता दिया। सब की विद्या, बुद्धि, बल, धन, वैभव समान नहीं हो सकते परन्तु भोजनादि जीवन के साधन सबको मिलें।

''समानी प्रपा सह वो अन्न भाग''

कोई भी भूखा न मरे इस कार्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक घर में बलिवैश्वदेवयज्ञ की नित्यविधि रक्खी।

''समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।'' (अथर्व. 3/30/6)

श्रम का महत्त्व - वेद निठल्ला निकम्मा रहने को बुरा समझता है अतः वेद का आदेश है -

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'' (यजु. 40/2)

सौ वर्ष कार्य करते हुए ही जिओ। प्रत्येक अवस्था में कुछ न कुछ उपयोगी काम करते रहना चाहिए।

''मागृधः कस्य स्विद्धनम्'' किसी का धन मत लो। किसी के परिश्रम की वस्तु मत उड़ाओ। वेद कहता है - **''नस्तेयमद्भि''** चोरी का माल मत खाओ। बिना पुरुषार्थ के दूसरों की कमाई पर ही रहना चोरी का माल खाना है। वेदों के उपर्युक्त उपदेश समाजवाद साम्यवाद सबकी पूर्ति निर्दोष रीति पर करते हैं।

ईश्वर के विषय में - लोग कहते हैं कि सृष्टि की प्रारम्भिक दशा में मनुष्य सूर्य, चन्द्र, बिजली, वायु आदि पदार्थों को देवता मानकर पूजता था। एकेश्वरवाद का ज्ञान तो मनुष्य को बहुत दिनों विचार करते रहने के बाद हो सका। इसीलिए वेद में अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, विद्युत की स्तुतियाँ हैं। परन्तु इन ज्ञानाभिमानी लोगों को यह पता नहीं है कि वेद ने अग्नि आदि सब नाम उपासना प्रकरण में ईश्वर के ही बताए हैं :-

'तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः' (यज. अध्याय 32)

वही अग्नि है, वही आदित्य है, वही वायु है, वही चन्द्रमा है।

''एकंसद् विप्राबहुधावदन्ति'' ऋग्वेद। ईश्वर एक ही है। उस एक ही अस्तित्व को ज्ञानी लोग बहुत नामों से पुकारते हैं।

''ईशावास्यमिदम् सर्वम्'' यजुः। इस सब जगत् में ईश्वर समाया हुआ है। वह सबमें व्यापक है। इससे दूर नहीं है। हमारे उसके बीच में हमारे अज्ञान का पर्दा पड़ा है।

स ''ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासुः यजुः। वह सब प्रजाओं में समाया है।

ईश्वर की उपासना ईश्वर के लिए कोई लाभ पहुँचने या खुशामद के लिए नहीं है। केवल अपने अज्ञान को दूर करने के लिए उसके गुणों का चिन्तन करना उपासना है। उसके गुण हम धारण करके मुक्त बनें यही है उपासना का प्रयोजन। ईश्वर निर्लेप है, निराकांक्षी है वह न पूजा भेंट चाहता है न बलिदान। वैदिक यज्ञों का प्रयोजन है वातावरण को शुद्ध नीरोग, प्राणप्रद बनाना। वेदों में दार्शनिक ज्ञान, गणित ज्ञान, आयुर्वेद, संगीत और पदार्थ ज्ञान की चर्चा भी यत्र-तत्र है। वेदों के अनुसार जीवात्मा अमर है, अल्पज्ञ है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अज्ञानवश बन्धन में पड़ता है। अपने कर्म फल भोगने के लिए ही अनेक शरीर धारण करता है। योग द्वारा जब कर्म से संस्कार वासना दूर हो जाती है तब मोक्ष पा लेता है। इस प्रकार लौकिक और पारलौकिक सभी विषयों में वेद पुरुषार्थ की शिक्षा देता है वेद कहता है -

''स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्वस्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व महिमा तेऽन्येन न संनशे।'' (यजु. 23/15)

हे शक्तिशालिन जीव, अपने शरीर को स्वयं बनाओ अर्थात् अच्छा बुरा शरीर पाना तुम्हारे कर्मों के आधीन है। स्वयं यज्ञ करो अर्थात् कर्म करो और स्वयं उसका फल सेवन करो। तुम्हारी महिमा और से नष्ट नहीं हो सकती। और कोई तुम्हारी महिमा में व्याप्त नहीं होगा। इस प्रकार स्वावलम्बन की शिक्षा देने वाला वैदिक धर्म ही सब मनुष्यों को ग्रहण करने योग्य है। भाग्य पर, देवताओं पर, नबी पैगम्बरों पर भरोसा करना वेद नहीं सिखाता। वेद कहता है अपनी महिमा को, प्रतिष्ठा को तुम स्वयं बना सकते हो। ईश्वर प्रबन्धकर्त्ता है। फलदाता है। परन्तु फलों की प्राप्ति का कर्म तुम्हारे आधीन है। गीता भी कहती है -

न कर्त्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते॥ (गीता 5/14)

ईश्वर जीवन के कर्त्तापन, कर्म, कर्म फल संयोग को नहीं रचता। स्वभाव प्रकृति ही इसमें प्रवृत्त होता है। (प्रकृति में नियम और नियंत्रण ईश्वर ने स्थापित कर रखा है) जैन धर्म भी यही कहता है। भौतिकवाद भी कर्म पर विश्वास रखता है इस प्रकार वेद ईश्वर को मानता है। ईश्वर प्रदत्त ज्ञान को मानता है परन्तु पुरुषार्थ की शिक्षा देता है। इससे न भाग्य पर दोष आता है न ईश्वर पर। अपने जीवन के निर्माता यह स्वयं हैं। इसलिए उपनिषद् ने कहा -

''चरैवेति चरैवेति''
चरन् वैमधु विन्दति''

काम करो, काम करो। काम करने वाला ही आनन्द पाता है।

- सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली

विचारणीय प्रसंग

पुरुषार्थ चतुष्टय – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की समीक्षा

– डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन शब्दों का अनादि काल से सम्बन्ध रहा है और अनन्त काल तक रहेगा। ये मात्र शब्द नहीं है; अपितु मनुष्य जीवन के प्रधान उद्देश्य हैं। मनुष्य जीवन का अपना एक उद्देश्य होता है, होना आवश्यक भी है। उद्देश्य के बिना जीवन निरर्थक-सा लगता है। उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनुष्य अथक परिश्रम करता है। जब उद्देश्यों की पूर्ति करने में मनुष्य को सफलता मिलती है, तब मनुष्य पुरुषार्थी कहलाता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये मनुष्य के चार पुरुषार्थ 'पुरुषार्थ-चतुष्टय' कहलाते हैं। वैदिक सन्ध्या के अन्त में ईश्वर से प्रार्थना की जाती है –

''हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः॥' (हे करुणा के भण्डार परमात्मन्! आपकी कृपा से इस जप, उपासना आदि कर्म से हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शीघ्र ही सिद्धि हो जाये।)

वैदिक काल के अनेक सिद्धान्त महाभारत काल तक प्रचलित रहे। इसी काल में वैदिक सिद्धान्तों का पतन होता हुआ दृष्टिगोचर होता है। वैदिक सिद्धान्तों के अभाव के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। इस युद्ध ने आर्यावर्त की गरिमामयी संस्कृति ही समाप्तप्राय कर दी। युद्ध के पश्चात् समय परिवर्तित होता गया। मनुष्य जीवन के उद्देश्य भी बदलते गये। पिता-पुत्र, भाई-भाई, माता-पुत्री, बहू-बहन आदि के रिश्ते में परिवर्तन आया। गृहस्थ जीवन का अर्थ भी बदल गया। मनुष्य जीवन से जुड़े हुए पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के अर्थ भी बदल गये। आज तो इन पुरुषार्थियों के बीच का सौहार्द, भाईचारा, पारस्परिक आदान-प्रदान, एक-दूसरे को परिपुष्ट करने की प्रवृत्ति खो चुकी है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन से अलग हो, खुले मैदान में पहुँचे हुए हैं। एक-दूसरे से भिड़ रहे हैं। एक-दूसरे को नीचा दिखाकर अपनी-अपनी श्रेष्ठता का बखान करने लगे हैं। 'धर्म' गरज उठा, 'मैं मनुष्य जीवन के अभ्युदय तथा निःश्रेयस् का साधन हूँ, लौकिक और पारलौकिक कर्म का प्रतिरूप हूँ। धर्म को बीच में ही टोकते, अपनी मूँछ पर ताव देते हुए, अर्थ ने अपना कहना प्रारम्भ कर दिया – ''अरे धर्म! तुम अपने अभ्युदय, निःश्रेयस् आदि शब्दों को भूल जाओ। तुम में अब यह भाव कहाँ है?मैं ही मनुष्य जीवन का केन्द्र बिन्दु हूँ। मैं ही धन हूँ, सम्पत्ति हूँ। अर्थ की प्राप्ति मानव जीवन की अन्तःप्रेरणा रही है, मैं ही मानव जीवन की सहज प्रवृत्ति हूँ। धर्म और अर्थ के बीच संघर्षमय वाद-विवाद के समय 'काम' भी चुप बैठा नहीं है। अपनी कमीज की आस्तीनें ऊपर चढ़ाते वह भी इसी संघर्ष में कूद पड़ा और कहने लगा, ''अरे धर्म और अर्थ! मेरी ओर भी निहारो, मुझे भी निहारो, मुझे भी पहचानो, मेरी श्रेष्ठता को भी जानने का प्रयास करो। मैं ही हूँ, इच्छा भोग, कामना। अरे बन्धुओं! जीवन क्षणभंगुर है, क्षणिक है। आज है, कल की कौन कहे?इसी जीवन में खाओ, पियो और मौज करो। जिन्दगी का नाम ही भोग है। भोगो, जितना चाहे भोगो। भोग ही आनन्द है, स्वर्ग है। मृत्यु के बाद, जब ईश्वर के दरबार में, अपना हिसाब देने के लिए हाजिर होंगे, तब ईश्वर पूछेगा – 'पृथ्वीलोक में तुमने क्या-क्या भोगा?तुम्हारे मुख से नकारार्थी शब्द सुनकर ईश्वर आज्ञा देगा – 'पुनः जन्म लो, पृथ्वीलोक में पहुँचो, सभी भोगों का आनन्द लो। मोक्ष ने अपने आपको विलग करते हुए, अपने मन्तव्य को आगे बढ़ाया – 'मैं मोक्ष हूँ। मोक्ष का दूसरा नाम है मुक्ति। दुःखों से छुटकारा ही मुक्ति है। पता नहीं, और क्या-क्या कहता गया – अन्यों ने 'मोक्ष' को सुना ही नहीं।

बीच में ही टोकने के कारण 'धर्म' अधिक विचलित हो उठा। अर्थ ने उसकी बात को अधूरा ही रखा था, 'अरे भाई! मुझे अपनी बात तो पूरी करने दो। मैं पक्षपातरहित न्याय हूँ, सत्य का स्वरूप हूँ।' धर्म की गपशप सुनकर 'मोक्ष' अधिक बौखला गया था। धर्म को थामते हुए उसने भी अपना मन्तव्य जारी रखा – 'अरे धर्म! अब तो तू रहा ही नहीं। तेरे तो कई टुकड़े हुए। परिवर्तनशील समय ने तेरी अर्थवत्ता ही नष्ट कर दी है। तेरा स्थान जरथुस्त्र ने लिया – पारसी धर्म चल पड़ा। जरथुस्त्र का स्थान मूसा इब्राहीम ने लिया, यहूदी धर्म चल पड़ा, यहूदी का स्थान जैन और बौद्धों ने ग्रहण किया। ईसाइयों ने जैन, बौद्ध धर्म को पछाड़ा। उसके बाद 'इस्लाम' आया। इसके अनन्तर भी अनेक पन्थ, साम्प्रदायी आये। इन सभी धर्मों का देवता अलग, विचाराधारा अलग, विश्वास भी अलग-थलग हैं। सभी का अपना-अपना अखाड़ा है। धर्म के इन ठेकेदारों ने, सच्चे तथा एकमात्र धर्म की छीछालेदर ही कर दी है। न सच्चा धर्म रहा, न कोई सच्चा सिद्धान्त ही। 'धर्म', 'मोक्ष' की कडुवाहट को सहन कर नहीं सका। धर्म ने उतनी ही कडुवाहट से मोक्ष की घिग्गी बन्द कर देना चाहा। 'अरे मोक्ष! तेरा तो अस्तित्व ही कहाँ है?अब तो तू केवल तीर्थों में बसा हुआ है। तीर्थों की यात्रा करो, 'मोक्ष' पाओ, नदियों में डुबकियाँ लगाओ, 'मोक्ष' पाओ। मोक्ष! तेरे पतन की यह महाकथा है। 'धर्म' पागल हुआ। वह अन्यों को छोड़कर, काम के पीछे पड़ा। अरे 'काम'! तू किसी समय 'काम देवता' था, अब तू 'काम राक्षस' कहलाने लगा है। तेरे चंगुल से बचा क्या है?खिलती हुई नन्हीं कली से लेकर 60-70 वर्ष की बुढ़िया भी तेरी शिकार हुई है, हो रही है। तू तो रम, रमा, बार-बाला, सेक्स स्कैण्डल में रमा है। हे काम! तेरी ज्वाला में सारा देश झुलस रहा है। क्या तेरी यही श्रेष्ठता है।'

प्रारम्भ में तो सभी पुरुषार्थी शब्द युद्ध में मग्न थे। धीरे-धीरे उनका संयम टूटने लगा। फिर वे हाथापायी पर उतर आये। किसी ने किसी का गला पकड़ा, किसी ने कमीज का कॉलर ही पकड़ा, किसी ने किसी की टाँग ही पकड़ी, सभी ने एक-दूसरे के वस्त्र ही फाड़ दिये, वे अर्द्धनग्न हुए, झगड़ते-झगड़ते नंगे ही हुए। पुरुषार्थियों के शोर-शराबे से समाज की शान्ति भंग हुई। जोर-जोर की आवाज से, समीप के थाने के दरोगा जी आ धमके। दरोगा ने सोचा, न समझा, उसने पुरुषार्थियों की जमकर पिटाई कर दी और उन्हें थानेदार के सामने खड़ा कर दिया। थानेदार, पुरुषार्थियों की हालत देखकर दंग ही रह गया। उसने बारी-बारी से सबकी पूछताँछ कर यह जानने का प्रयत्न किया कि मामला क्या है?उसे समझने में देर नहीं लगी कि पुरुषार्थियों का यह आपस का मामला है। प्रथम थानेदार ने पुरुषार्थी बन्दियों को आपस में सुलह करने का सुझाव दिया, पर किसी ने माना ही नहीं। थानेदार ने जब देखा कि मामला गम्भीर है, तब उसने रिपोर्ट तैयार की कि सार्वजनिक स्थान पर अशान्ति पैदा करना, समूचे मानव समाज की शान्ति, सुख, आनन्द छीन लेना, दुष्कर्म के मामले की उसने रिपोर्ट तैयार की, आज्ञा दी कि पुरुषार्थियों को बेड़ियाँ डालकर, उन्हें परमात्मा के न्यायालय में हाजिर करें।

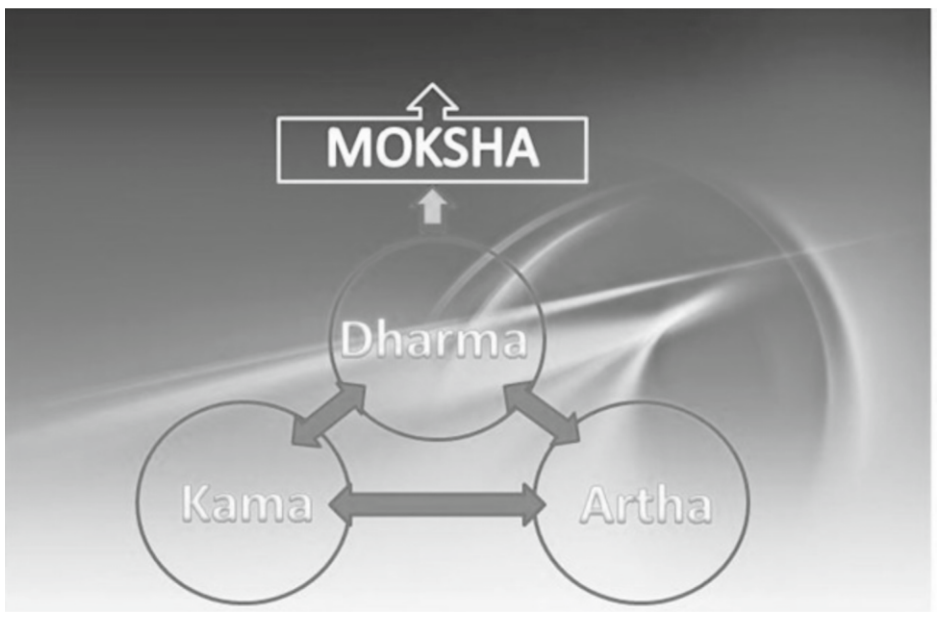

थानेदार की आज्ञानुसार सभी कैदी न्यायालय में हाजिर हुए। न्यायाधीश महोदय पधारे – उन्होंने अपना न्याय आसन ग्रहण किया। गम्भीर मुद्रा में सभी कैदियों की ओर अपनी दृष्टि दौड़ायी। मामले की गम्भीरता को पहचानने में उन्हें देर नहीं लगी; क्योंकि थानेदार की रिपोर्ट उनके सम्मुख थी। प्रथम, उन्होंने सबको अपना-अपना पक्ष रखने की आज्ञा दी। पुरुषार्थियों ने अपना-अपना राग अलापा, अपनी-अपनी ढफली बजायी, इतना ही नहीं, एक-दूसरे पर कीचड़ भी उछाला। न्यायाधीश परमात्मा दुःखी हुए – उन्हीं के सम्मुख वेदों के सिद्धान्त पतित हो रहे थे। एक ग्लास पानी पी गम्भीर हो कहने लगे – ''अरे बन्धुओं! तुम लोग कहाँ से कहाँ पहुँचे हो?कभी सोचा है?तुम पुरुषार्थी हो, वेदों के सिद्धान्त हो। वेद अनादि हैं, नित्य हैं, सार्वकालिक, सार्वभौमिक हैं। तुम भी अनादि हो – मनुष्य को श्रेष्ठतम बनाने वाले साधन हो। बन्धुओं! आप सभी अपने आपको पहचानो। अरे धर्म! तुम्हारी परिभाषाएँ अनन्त हैं – **'ध्रियते सुख प्राप्तये सेवयते स धर्मः, पक्षपातरहितो न्यायः, सत्याचारो वा'** अर्थात् सुख प्राप्ति के लिए न्याय और सत्यस्वरूप है – वह धर्म है। मनु ने धर्म के दस लक्षण दर्शाये हैं – 'धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध। मनुष्य जीवन का विशुद्ध आचरण ही धर्म है। धर्म का आधार सत्य है, सत्य ही धर्म है।

'अर्थ' की ओर अँगुली उठाते हुए, न्यायाधीश महोदय 'अर्थ' को आगाह करने के स्वर में कहने लगे, 'अर्थ'! तुम्हारी भी महत्ता है। अर्थ मनुष्य जीवन का केन्द्र बिन्दु है। पिण्ड पोषण के लिए 'अर्थ' की ओर प्रवृत्त होना, यह मानव जीवन की सहज प्रवृत्ति है। 'अर्थ' को अध्यात्मक की भित्ति पर प्रतिष्ठित करना मेरा वेदों में सन्देश है। 'अर्थ' का उपार्जन न्यायपूर्वक और धर्म के द्वारा ही होना चाहिए। केवल पुरुषार्थ से कमाया धन, अपना धन समझे। अर्थार्जन से स्वयं का भला हो और अन्यों का भी भला हो। चोरी-डकैती, छल-कपट, हिंसा, अन्याय आदि से प्राप्त धन यह वर्जित अर्थ है। ऐसा वर्जित अर्थ 'क्लेश' एवं 'विनाश' का कारण है। अर्थ की शुचिता ही वरेण्य है। अर्थ! बताओ – क्या तुम अपने अर्थ को समझ गये?तुम तो वर्तमान में काफी बदल गये हो। वर्तमान का हर वर्ग 'अर्थ' के संचय में लगा है। 'अर्थ' संचय में अनुचित कुछ नहीं है; पर उसमें सहजता होनी चाहिए।'

अब बारी आयी है 'काम' की। 'काम' को समझाते हुए उन्होंने कहा – 'पुरुषार्थ के सम्बन्ध में जीवन की सुविधाओं की प्राप्ति का नाम है 'काम'। केवल इच्छा, भोग, कामना आदि कदापि नहीं। 'काम' में मनुष्योचित्त पदार्थों का सेवन, जीवन-रक्षा और समाज-देश की सेवा-भावना निहित है।'

'मोक्ष' न्यायाधीश की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहा था। वह भी अपने अर्थ को जानने के लिए उत्सुक था, उसने भी अपने 'अर्थ' को खोया था। परम पुरुषार्थ का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष अर्थात् मुक्ति, दुःख से मुक्ति, दुःख का ध्वंस ही मोक्ष है। मनुष्य जन्म-जन्मान्तर के फेरे में फँसा हुआ है, वह इससे छुटकारा चाहता है। इस छुटकारे में मनुष्य जब सफल होता है, तब वह 'मोक्ष' को प्राप्त करता है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – ये वैदिक संस्कृति के चार पुरुषार्थ हैं। उनके बीच अभिन्नता दर्शाते हुए, न्यायाधीश ने पुरुषार्थ की महिमा का बखान किया। पुरुषार्थ ही आश्रमों-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास की संजीवनी है। बुद्धि के लिए धर्म की, शरीर-पोषण के लिए अर्थ की, मन की सन्तुष्टि के लिए 'काम' की और आत्मा की सन्तुष्टि के लिए 'मोक्ष' की आवश्यकता है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही पुरुषार्थ, अभिन्न रूप से मनुष्य जीवन के अंग बने हुए हैं। मेरी इच्छा है – ये पुरुषार्थ अनेक काल तक अभिन्न अंग बने रहें – अन्यथा विनाश है ही।

''धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्॥

– 11, भोसले इलायट, भोसले नगर,
पुणे-411007 (महाराष्ट्र)

पृष्ठ 1 का शेष

वार्षिकोत्सव एवं 23वाँ दुर्लभ शारद यज्ञ 16 अक्टूबर, 2023 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

पूर्णाहुति के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य संन्यासी एवं नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्‌बोधन में दैनिक संध्या, उपासना, दैनिक स्वाध्याय तथा साप्ताहिक अथवा पाक्षिक यज्ञ अवश्य करने का संकल्प दिलावाया। वहीं उन्होंने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं जिससे स्वयं को सुख और प्रसन्नता मिले और दूसरों का उपकार हो वे सभी यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ में प्राणीमात्र के कल्याण की भावना निहित है। उन्होंने कहा कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्मः' यज्ञ दुनिया का श्रेष्ठतम् कर्म कहलाता है। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ में यदि गाय का घृत और औषधि युक्त सामग्री का प्रयोग किया जाये तो विषैले रोगाणुओं को तो नष्ट करेगा ही क्योंकि यज्ञ की अग्नि में विषैले जीवाणुओं तथा तत्त्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता होती है। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायु मण्डल की पवित्रता, विविध रोगों का नाश तथा दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। स्वामी जी ने उपस्थित सभी आर्यजनों को यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व को समझाते हुए कहा कि हम सबको प्रतिदिन औषधियुक्त सामग्री तथा शुद्ध देशी घी से यज्ञ करना चाहिए। हमें भारत की प्राचीन यज्ञीय परम्परा को पूरे विश्व में फैलाने का प्रचार–प्रसार करना चाहिए। इससे मानवता एवं पर्यावरण का अत्यन्त उपकार होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज हमेशा कहा करते थे कि पूर्ण समर्पित भाव से यज्ञ तथा परोपकार के कार्य करने चाहिए। स्वामी जी स्वयं लोगों के सेवा में सदैव तत्पर रहते थे और उसी भावना से अभिभूत होकर आचार्य महावीर जी व इनके सभी सहयोगियों ने जिनमें मुख्यरूप से स्वामी सुमेधानन्द शिष्यमण्डल, दयानन्द उच्च विद्यालय के सभी अध्यापक–अध्यापिकाएँ एवं अन्य कार्यकर्ता विशेष रूप से यज्ञ एवं परोपकार के कार्यों में लगे रहते हैं। ये सभी महानुभाव प्रशंसा के पात्र हैं। पूज्य स्वामी समुमेधानन्द जी महाराज द्वारा शुरू किये गये दुर्लभ शारद यज्ञ को निरन्तर जारी रखने के संकल्प के लिए स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य महावीर जी को विशेष साधुवाद दिया।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए थे। मठ की ओर से उनका विशेष अभिनन्दन किया गया। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने दयानन्द मठ चम्बा के माध्यम से आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार–प्रसार की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के इस रमणीक स्थान पर स्थापित दयानन्द मठ चम्बा निःसंदेह आर्यों का एक तीर्थ स्थल है। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने मठ के माध्यम से पूरे आर्य जगत का नेतृत्व किया और सैकड़ों स्नातक आर्य समाज को दिये। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि मठ के स्नातक हिमाचल के सैकड़ों विद्यालयों में अध्यापक के रूप में सेवारत हैं और आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को अपना योगदान देते हैं। प्रो. विट्ठलराव जी ने ब्रह्माण्ड के रचयिता ईश्वर के सम्बन्ध में बताते हुए कहा कि इस विशाल ब्रह्माण्ड की रचना निराकार ईश्वर ही कर सकते हैं। अतः वह ईश्वर साकार नहीं हो सकता। वर्तमान समय में ईश्वर के स्वरूप को लेकर विभिन्न प्रकार के मतभेद दुनिया में प्रचलित हैं, किन्तु वेदों के अनुसार वह ईश्वर निराकार, सर्वअन्तरयामी, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान है। उसी एक ईश्वर की बनाई हुई यह सृष्टि और इस पर रहने वाले समस्त मानव उसकी सन्तान हैं। जिसे हमें वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में भी सम्बोधित करते हैं।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र

सेवा के लिए आगे आयें। उन्होंने कहा कि यह वर्ष स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती का वर्ष है। अतः स्वामी दयानन्द जी का संदेश हमें घर–घर पहुंचाना चाहिए।

पूर्णाहुति के अवसर पर आचार्य महावीर सिंह जी ने इस शारद यज्ञ के समस्त सहयोगियों एवं आगन्तुक संन्यासियों, विद्वानों एवं गणमान्य महानुभावों का मठ की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया तथा अपना आशीर्वाद एवं सहयोग बनाये रखने की प्रार्थना की।

इस पाँच दिवसीय कार्यक्रम में मुख्यरूप से श्री श्रीमती सरस्वती आर्या, श्रीमती करुणा आर्या (मंत्री दयानन्द मठ), श्रीमती बृजबाला (प्रधानाचार्या), श्री रमेश चन्द्र शास्त्री, श्रीमती डिम्पल आदि के अतिरिक्त श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, श्री अमर सिंह आर्य, श्री राकेश शास्त्री, श्री दीनानाथ, श्री राजेन्द्र शास्त्री, श्री सुरेश शास्त्री, श्री विशाल, श्री हितेष सहित अन्य कार्यकर्ताओं एवं विद्यालय की अध्यापिकाओं का विशेष सहयोग रहा। श्री जनक राज दुग्गल अमृतसर, श्री सुरेन्द्र आर्य नादौन, श्री जवाहर लाल मेहरा अमृतसर, श्री मनप्रीत नागपाल चम्बा, श्री अमर सिंह आर्य आदि यज्ञ में यजमान बनें और यज्ञ को आगे बढ़ाया।

पांच दिवसीय कार्यक्रम में विद्यालय की सभी अध्यापिकाओं एवं दयानन्द मठ चम्बा के सभी कार्यकर्ताओं तथा स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था में अपना योगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का 200वाँ जन्म जयन्ती महोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों पर चलने की आवश्यकता – डॉ. अशोक कुमार चौहान

अब जातिवाद समाप्त होना चाहिए –मनोज तिवारी

दिनांक 9 अक्टूबर, 2023 (सोमवार) को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 46वें स्थापना दिवस के अवसर पर "महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती महोत्सव का भव्य आयोजन आर्य समाज डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली में किया गया। समारोह में देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग 800 आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और महर्षि दयानंद जी के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विमलेश बंसल ने यज्ञ में राष्ट्र कल्याण के लिए आहुतियां डलवाई। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के दानवीर भामाशाह आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह जी ने ओ३म् ध्वज फहरा कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने आर्यजनों का आह्वान किया कि सभी एकजुट होकर वैदिक संस्कृति एवं वेद मार्ग पर चलने का प्रयास करें उसी से देश और संसार का कल्याण हो सकता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी एक समता मूलक समाज चाहते थे, हमारी जाति केवल मनुष्य है, हमें वसुधैव कुटुम्बकम् के बारे में सोचना चाहिए की पूरा विश्व मेरा परिवार है। जन्मना जाति देश के लिए घातक है। जन्म के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। मनुष्य की पहचान कर्म से होती है।

समारोह के अध्यक्ष शिक्षाविद डॉ. अशोक कुमार चौहान संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी शिक्षण संस्थान ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है और उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द के आदर्शों को अपनाने से ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। आर्य जनों को सामूहिक प्रयास करना चाहिए जिससे पूरे विश्व में शांति एवं भाईचारा स्थापित किया जा सके। यदि सभी आगे बढ़ेंगे तभी देश का सही मायने में विकास होगा। केवल कुछ लोगों के भले के बारे में सोचने से समाज कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता।

समारोह के संयोजक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान युवा पीढ़ी का निर्माण समय की आवश्यकता है। जिसे परिषद् गत 45 वर्षों से कर रही है। संस्कारित युवाओं का चरित्र निर्माण अभियान तीव्र गति से चलाया जाएगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् अपने स्थापना काल से ही वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार तथा युवाओं को जागरूक करके समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में प्राणपण से कार्य करती रही है और आगे भी राष्ट्ररक्षा एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करती रहेगी। यदि देश का युवा जागरूक और चरित्रवान होगा तभी देश का सही मायने में भला हो सकेगा।

इस अवसर पर राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी ने अपने ओजस्वी वाणी से समा बांध दिया।

इस अवसर पर सर्वश्री वैदिक विद्वान आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, आचार्य गवेंद्र शास्त्री, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' (चंडीगढ़), स्वामी विश्वानन्द जी, आचार्य कृष्ण प्रसाद कौटिल्य (झारखण्ड) आदि ने संबोधित करते हुए नव जागरण का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान पिंकी आर्या, प्रवीण आर्य (गाजियाबाद), शिशुपाल आर्य, दया आर्या, रजनी गर्ग आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

आर्य नेता आनन्द चौहान एवं अजय चौहान ने कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों का अभिनंदन किया और कार्यक्रम आयोजकों को शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर सर्वश्री आचार्य महेन्द्र भाई, देवेन्द्र भगत, धर्मपाल आर्य, रामकुमार आर्य, अरूण आर्य, सौरभ गुप्ता, आनन्द प्रकाश आर्य हापुड़, मकेंद्र कुमार फ़रीदाबाद, सुरेश आर्य, श्री कृष्ण दहिया जींद, अशोक जांगड़ रोहतक, राजेश मेंहदीरत्ता, अमर सिंह सहरावत, नसीब सिंह महेन्द्र गढ़, सोनिया संजू, राधा भारद्वाज, आर. पी. सूरी, सौरभ आर्य–यमुना नगर, हरहर आर्य–रांची आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान आर्य युवकों ने योगासन आदि करतब दिखाए। कार्यक्रम उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज मोहाली, चण्डीगढ़ का वार्षिकोत्सव समारोह उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

प्रतिष्ठित आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

दिनांक 8 अक्टूबर, 2023 को आर्य समाज, मोहाली, चण्डीगढ का वार्षिकोत्सव समारोह उत्साहपूर्वक धूमधाम से मनाया गया है। वार्षिकोत्सव समारोह प्रातः यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ में यजमान के रूप में मेजर विजय आर्य एवं श्री राजेन्द्र महाजन (दुबई) विराजमान हुए। यज्ञ के ब्रह्मा का पद आचार्य लक्ष्मण प्रसाद शास्त्री जी ने सुशोभित किया तथा उपाचार्य श्री नरेन्द्र शास्त्री जी ने अपने कुशल नेतृत्व में यज्ञ को सम्पन्न कराया। यज्ञ के उपरान्त भजन गायन का कार्यक्रम श्री गंगाराम आर्य पलवल एवं श्री रामवीर आर्य प्रभाकर फरीदाबाद, हरियाणा के भजनों की धूम रही। भजनोपदेशकों ने अपने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर अपना उद्बोधन देते हुए सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक संस्कृति के महत्त्व पर गंभीर चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा कि संस्कृति के नाम पर वर्तमान समय में अपसंस्कृति का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति को पूरी तरह विकृत करके जन सामान्य को दिग्भ्रमित किया जा रहा है। प्रायः देखने में आता है कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर भद्दे गाने एवं अश्लील नृत्य परोसे जाते हैं। जिन्हें किसी भी दृष्टि से सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं कहा जा सकता और यह बड़ी विडम्बना है कि ऐसे कार्यक्रमों को सभी विद्यालयों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर किया जाता है। प्राचीन वैदिक संस्कृति तप, त्याग, सेवा, परोपकार तथा मैत्री भाव पर टिकी हुई है। किन्तु वर्तमान समय में ये सभी महत्त्वपूर्ण बिन्दु सामान्य व्यक्ति के जीवन से गायब होता जा रहा है। संस्कृति रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि हमें व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में उन सभी मूल्यों को अपनाना होगा जिनके द्वारा हम वैदिक संस्कृति को पुनर्स्थापित कर सकते हैं। स्वयं अपने हित का चिन्तन करना और स्वार्थपूर्ति के लिए अनैतिक कार्य करने में संलग्न रहना वैदिक संस्कृति नहीं है। वैदिक संस्कृति औरों के लिए जीना सिखाती है। औरों को खिलाकर स्वयं को खाने की प्रेरणा देती है। अन्यों की उन्नति में अपनी उन्नति समझने की शिक्षा देती है। त्याग, तप एवं सेवा के माध्यम से प्रत्येक मनुष्य को परोपकारी, सदाचारी एवं मानव मात्र के हित अपना लक्ष्य बनाकर कार्य करना वैदिक संस्कृति का लक्ष्य है। आज वैदिक संस्कृति के मुख्य स्तम्भ योगेश्वर श्रीकृष्ण तथा मर्यादा पुरुषोत्तम राम के सम्बन्ध में भी अनेक कथावाचक एवं धर्मगुरु भ्रान्त बातों

को प्रचारित करते हैं। जो एक अक्षम्य अपराध है। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यजनों को प्रेरित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्म शताब्दी पर हम सभी वैदिक संस्कृति की रक्षा के कृत–संकल्पित हों। समाज में फैलाई जा रही भ्रान्त धारणाओं, रुढ़ियों एवं अवैदिक मान्यताओं को चुनौती दें और वैदिक संस्कृति के मौलिक सिद्धान्तों को प्रचारित–प्रसारित करें।

कार्यक्रम के अंत में आर्य समाज चंडीगढ़ पंचकुला, मोहाली खरड़ बिलॉन्गी राजपुरा से आए हुए मंत्रियों को स्मृति चिन्ह प्रदान करके सम्मान किया गया। आर्य समाज सैक्टर–9, पंचकुला के धर्माचार्य आचार्य जयवीर वैदिक ने स्वामी आर्यवेश जी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अपने महत्त्वपूर्ण विचार भी इस अवसर पर प्रस्तुत किये। उन्होंने विशेष रूप से आर्य समाज के पदाधिकारियों को सुझाव दिया कि वे जाति सूचक शब्द अपने नाम के साथ लगाना बन्द करें और आर्य शब्द से अपने आपको सम्मानित करें।

विदित हो कि यह कार्यक्रम मेजर विजय आर्य मंत्री वेद प्रचार समिति मोहाली के परिवारजनों के जन्मदिन आदि को केन्द्रित करके किया जाता है। विशेष रूप से अक्टूबर माह में मेजर विजय आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती शशि वर्मा का जन्मदिन 10 अक्टूबर, उनके सुपुत्र श्री जशन का जन्मदिन 20 अक्टूबर, उनकी पुत्रवधु जो जर्मनी में रहती है उनका जन्मदिन 25 अक्टूबर और इसी प्रकार विवाह की सालगिरह भी इनके पुत्रों की 2 अक्टूबर एवं 19 अक्टूबर होती है। इन सभी प्रसंगों को दृष्टिगत रखते हुए प्रतिवर्ष मेजर विजय आर्य प्रतिवर्ष ये कार्यक्रम आयोजित करते हैं। आज के इस कार्यक्रम में मुख्य यजमान श्री राजेन्द्र महाजन और उनके पुत्र रघु महाजन थे और स्वयं मेजर विजय आर्य भी मुख्य यजमान रहे। कार्यक्रम में आर्य समाज सैक्टर–9 पंचकुला के प्रधान श्री धर्मवीर बत्रा, सैक्टर–19 चण्डीगढ़ के प्रधान डॉ. अजय गुप्ता, सैक्टर–32 के प्रधान श्री योगराज चौधरी, सैक्टर–7 चण्डीगढ़ के मंत्री श्री प्रकाश, आर्य समाज खरड़ के प्रधान श्री बन्धु जी, श्री सतीश अरोड़ नांगल टाउनशिप, श्री अशोक छावड़ा, श्री सोमदत्त शास्त्री सैक्टर–22, श्री अशोक आर्य पंचकुला, श्री अवनीश चौहान सैक्टर–22 चण्डीगढ़ आदि प्रमुख पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के उपरान्त उपस्थित आर्यजनों के लिए प्रीतिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी तथा सभी को भेंट एवं प्रसाद स्वरूप मिष्ठान भी भेंट किया गया था। अंत में वेद प्रचार समिति मोहाली के प्रधान श्री मधुकर कौड़ा जी ने आगंतुक अतिथियों का सम्मान एवं धन्यवाद किया।

आर्य समाज राजपुरा टाउन, पंजाब में स्वामी आर्यवेश जी का प्रभावशाली प्रवचन

8 अक्टूबर, 2023 (रविवार) को प्रातः 9 बजे यज्ञ हुआ सम्पन्न

आर्य समाज, राजपुरा टाउन, पंजाब में गत् 8 अक्टूबर, 2023 (रविवार) को स्वामी आर्यवेश जी का प्रातः यज्ञ के उपरान्त प्रभावशाली प्रवचन हुआ। स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज समिति, मोहाली के वार्षिक समारोह में सम्मिलित होने के लिए चण्डीगढ़ आये थे। मेजर विजय आर्य की प्रेरणा से आर्य समाज राजपुरा टाउन में उनका प्रातःकाल प्रवचन रखा गया और उसके पश्चात् दोपहर के कार्यक्रम में वे मोहाली पहुंचे। राजपुरा में प्रवचन देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विभिन्न घटनाओं पर मार्मिक प्रकाश डाला और आर्यजनों का आह्वान किया कि इस वर्ष को पूरे उत्साह एवं जोश–खरोश के साथ मनायें। स्वामी जी ने कहा कि

राजपुरा टाउन के कम से कम 200 नये लोगों तक हमारे सभी पदाधिकारी एवं सदस्य स्वयं सम्पर्क करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से सम्बन्धित टैक्ट एवं प्रचार सामग्री वितरित करें। उनके चित्र घर–घर में टंगवायें। इससे ऋषि दयानन्द जी के विचारों से आम व्यक्ति को जोड़ा जा सकता है। आर्य समाज के संरक्षक श्री अशोक छावड़ा एवं अन्य पदाधिकारियों ने स्वामी जी का ओ३म् पट्ट तथा माल्यार्पण द्वारा भव्य स्वागत किया गया और आग्रह किया कि आप समय–समय पर हमारी समाज में आकर हमें प्रेरित करते रहें। कार्यक्रम के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी, स्त्री आर्य समाज की पूर्व प्रधाना माता सुमन चावला से उनके निवास पर कुशल क्षेम पूंछने के लिए गये और वहां से सीधे मोहाली के कार्यक्रम में पहुंचे।

मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा कितना सच! कितना झूठ!!

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

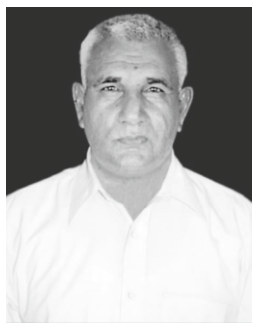

प्राण-प्रतिष्ठा कैसे?

कहा जाता है कि मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा वैदिक मन्त्रों के साथ शास्त्र विहित विधान से की जाती है। इससे बड़ा झूठ और वह भी धर्म के नाम पर, कहीं देखने को नहीं मिलेगा। वेदों में जब साकारवाद नहीं निराकारवाद है, अनेकेश्वरवाद नहीं एकेश्वरवाद है, मूर्तिपूजा नहीं निराकार ब्रह्म की स्तुति, प्रार्थना, उपासना का विधान है तो फिर किन वेद मन्त्रों से मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करना सम्भव है?वेद मन्त्रों के गलत विनियोग और प्रयोग से स्वार्थ सिद्धि के लिए यदि ऐसा किया जाता है तो उसका औचित्य क्या है सिवाय लोगों को भ्रमित करने और व्यावसायिकता चमकाने के?कोई भी ऐसा वेदमन्त्र नहीं है जो मूर्तिपूजा का समर्थन करता हो, मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा को स्वीकारता हो अथवा प्राण-प्रतिष्ठा का विधान रचता हो। यदि ऐसी कोई बात होती तो फिर शिरडी-साईं की मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करने पर कोई विवाद शंकराचार्य खड़ा ही न कर पाते। प्राण-प्रतिष्ठा को कुछ चुने हुए हिन्दू देवी-देवताओं तक सीमित रखना स्वयं में इस तथ्य को अनावर्त करता है कि सिवाय धोखा देने के, भ्रम फैलाने के कोई दूसरी बात इसमें नहीं है। वेदों में, उपवेदों में, दर्शनों में, उपनिषदों में, मनु स्मृति में कहीं कोई शास्त्रीय विधान मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करने का नहीं है क्योंकि ये सभी शास्त्र तब अस्तित्व में आये थे जब भारत में मूर्तिपूजा का प्रचलन ही नहीं था। अत: इस सन्दर्भ में यदि किसी शास्त्रीय विधान का हवाला दिया जाता है तो निश्चय ही वह शास्त्र और विधि-विधान अशास्त्रीय है, अवैदिक है, मनगढ़ंत है, स्वार्थी धर्मध्वजों की कल्पना है, व्यावसायिक बुद्धि का परिणाम है।

एकलव्य का प्रमाण गलत है

मूर्तिपूजा का औचित्य सिद्ध करने के लिए पौराणिक विद्वान् प्राय: महाभारतकालीन एकलव्य का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि द्रोणाचार्य की मूर्ति अपने समक्ष रख उसने धनुर्विद्या में अर्जुन और कर्ण से भी अधिक पारंगता व महारत हासिल कर ली थी। महाभारत में पहले तो एकलव्य को द्रोणाचार्य की मूर्ति की पूजा करते कहीं नहीं दिखाया गया है। दूसरे, द्रोणाचार्य अपने युग के जीवित युग-पुरुष थे, देवता नहीं थे कि उनकी मूर्तिपूजा की जाती। किसी भी गुरु या ऋषि की मूर्तिपूजा का विधान शास्त्रों में नहीं है। तीसरे, एकलव्य ने मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा कराई थी इसका भी कोई प्रमाण नहीं है। चौथे, एकलव्य दलित था अत: उसे तो वैसे ही मूर्तिपूजा का अधिकार पौराणिक मान्यता के अनुसार नहीं होना चाहिए था। पांचवें, महाभारत काल में मूर्तिपूजा थी ही नहीं तो एकलव्य ने कहाँ से मूर्तिपूजा की होगी?छठे, अपने समक्ष द्रोणाचार्य की मूर्ति रख एकलव्य अपने उस रोष, आक्रोश, प्रतिशोध को जीवंत रखने में प्रयासरत भी तो हो सकता था जिसे द्रोणाचार्य के नकारात्मक दृष्टिकोण ने पैदा किया था?दुर्जन-तोष न्याय से यदि यह मान भी लिया जाये कि एकलव्य ने मूर्तिपूजा की बदौलत ही धनुर्विद्या में सिद्धि प्राप्त की थी तो सिद्ध है कि बिना प्राण प्रतिष्ठा वाली मूर्ति में भी बरदान देने की क्षमता सम्भव है। तब मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करने का ढोंग क्यों रचा जाता है?वैसे भी जब परमात्मा कण-कण में विद्यमान है, मूर्ति में भी विद्यमान है फिर पुन: मूर्ति में उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करने का प्रदर्शन क्यों?ऐसा केवल लोगों को भ्रमित करने, उनको ठगने का उपक्रम मात्र है।

चमत्कारों का प्रभाव क्षणिक है

भारत में अनेक ऐसे मन्दिर व सिद्धपीठ हैं जिनके बारे में दावे के साथ पुरजोर प्रचार किया जाता है कि वहाँ साधना करने से यथाशीघ्र सिद्धि मिलती है, भूत-प्रेत से छुटकारा मिलता है, प्रमाण मिलते हैं कि मुम्बई का मुंवा देवी या सिद्धि-विनायक मन्दिर, कोलकाता (दक्षिणेश्वर) का काली देवी का मंदिर में अवतारी देवी-देवता आज भी विराजमान हैं। वृन्दावन का निधिवन तिरुपति, बाला जी आदि मन्दिरों का विशेष रूप से इस सन्दर्भ में हम उल्लेख कर सकते हैं जहाँ प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोग भक्तिभावना से जाते हैं। भारत ऋषि-मुनियों की धरती रही है। उन्होंने कब कहाँ बैठकर तपस्या-साधना की सब इतिहास की तह में दबते चले गये। लेकिन ऐसे एक नहीं

अनेक स्थल हैं जहाँ बैठकर साधक जल्दी साधना में ध्यानस्थ, एकातिक व एकनिष्ठ हो जाता है। निश्चय ही वह तपोभूमि होने का संकेत देती है जिस पर कहीं-कहीं पौराणिकों ने आधिपत्य स्थापित कर लिया है। सिद्ध पुरुष आज भी हैं जो धर्म पारायण होने से कुछ स्थानों में चमत्कारिक आकर्षण पैदा कर देते हैं जिससे कि आमजन की धर्म-प्रवृत्ति अध्यात्म में, सिद्धि में, चमत्कारों में अक्षुण्ण रहे। लेकिन ऐसे चमत्कारी सिद्ध पुरुष न तो भगवान् होते हैं, न सम्प्रदाय विशेष के प्रवर्तक होते हैं, न ही ऐसी सिद्ध पीठों से सभी को समान रूप से लाभ मिलता है और न ही उससे मूर्तिपूजा का औचित्य सिद्ध होता है। यदि सभी के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक रोग वहाँ जाने से नष्ट हो जाया करते तो भारत में न अस्पतालों व पागलखानों की जरूरत पड़ती, न तान्त्रिकों-मान्त्रिकों की पूछ होती, न फलित ज्योतिष और वास्तु शास्त्र को कोई महत्त्व मिलता। चमत्कार और सिद्धि का प्रभाव होता अवश्य है लेकिन सीमित होता है। दुष्प्रचार करके, बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करके प्राय: लोगों को भ्रमित किया जाता है। भारत में आस्था और भेड़चाल ऐसे दुष्प्रचार को ही सदाचार और परोपकार में परिवर्तित कर आगे बढ़ाती है, दीर्घजीवी बनाती है। वास्तव में सिद्ध पुरुषों के पुरुषार्थ, क्षमता और श्रेय को मूर्ति में घटित करना व उसे मूर्ति पूजा का चमत्कार मानना मूलत: गलत है।

एक सवाल

लाखों हिन्दू परिवारों ने सदियों से अपने निवास में मन्दिर बना रखे हैं जिनके आगे बैठकर वे आरती-पूजन करते हैं। हर वर्ष लाखों महिलाएँ दीवार पर सांझी सजाकर कई-कई दिन सायंकालीन उसकी पूजा-अर्चना कर अंत में उसे जल में प्रवाहित कर देती हैं। हर वर्ष लाखों परिवार दीपावली पर घर में लक्ष्मी-पूजन करते हैं। इसी प्रकार लाखों लोग हर वर्ष गोवर्धन पूजा करते हैं। इन सभी प्रसंगों में मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं होती फिर भी उसके समक्ष लोग भजन-पूजन करते हैं। जगरातों में भी मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं होती। तो क्या यह सब अपने आप में पाखण्ड सिद्ध नहीं होता?आज तक इस पाखण्ड के विरुद्ध आवाज बुलंद क्यों नहीं हुई है?क्या सनातनी धर्माचार्य इसका उत्तर देंगे?यदि यह पाखण्ड धर्मोचित है तो मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा क्या इससे भी बड़ा पाखण्ड नहीं है?

अंतिम निवेदन

निष्कर्ष रूप में पाठकों से हमारा इतना ही निवेदन रहेगा कि जब करोड़ों वर्ष तक, वेद विद्या के प्रकाश में, मूर्तिपूजा के बिना, इस धराधाम पर अध्यात्म, धर्म, आस्था, श्रद्धा, विश्वास जीवंत रहे, समृद्ध रहे, प्राणवान् रहे और भारत अपनी इसी निधि के बल पर विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित भी रहा तो आज हमें आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास का आश्रय लेने की क्या आवश्यकता है?मूर्तिपूजा ने पहले ईश्वर को बांटा, फिर धर्म को बांटा, फिर मन्दिरों को बांटा और अब इंसानियत को बांट रही है। मूर्तिपूजा के यही नुकसान नहीं हैं और भी अनेक नुकसान हैं जिसके कारण सम्प्रदाय, पंथ, मजहब व्यावसायिक हो गये हैं, प्रदर्शनकारी हो गये हैं, झूठे प्रचार-तन्त्र के मोहताज हो गये हैं, भीड़तन्त्र के स्रोत हो गये हैं, पाखण्ड के रहनुमा हो गये हैं, धर्म-बैंक होने का श्रेय बटोर रहे हैं, मुक्ति मोक्ष के ठेकेदार हो गये हैं। इसी अनर्गल प्रचार-तन्त्र का भाण्डाफोड़ कर ऋषिवर दयानन्द ने वेदों की ओर लौटो का समाघोष गुंजाया था। वेदों के यथार्थ स्वरूप को सामने लाने के लिए ऋषिवर दयानन्द और उनके आर्य समाज के मनीषी विद्वानों का प्रशंसनीय योगदान रहा। सायण, महीधर, उब्वट, रावण, ग्रीफ्थ, मैक्डोनल, मैक्समूलर आदि ने वेदों पर जो धूल एकत्र की उस धूल के छंटने में इस योगदान से काफी सहायता मिली। योगी, अरविन्द घोष सरीखे उद्भट पुरोधा ने ऋषिवर दयानन्द के प्रयासों को अद्वितीय करार दिया। ऋषि की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और वेदभाष्य जब प्रकाश में आये तो मैक्समूलर को भी सायण की मनोवृत्ति का परित्याग करने पर विवश होना पड़ा। ऋषिवर दयानन्द और आर्य समाज का नाम यदि जीवित है, उसे प्रशंसा यदि कहीं मिल रही है तो वेद विद्या की पुन: प्रतिष्ठा करने की बदौलत ही मिल रही है। देश-दुनिया से यदि अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, श्राद्ध-तर्पण, कुम्भ कांवड़, फलित ज्योतिष-वास्तु शास्त्र, तन्त्र-मन्त्र, तीर्थाटन-परिक्रमा, मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा जैसे पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास को जड़ मूल से उखाड़ फेंकना है तो हमें पुन: वेद के शरणागत होना पड़ेगा। वेद की रक्षा, प्रतिष्ठा में ही धर्म, अध्यात्म, भक्ति व साधना की रक्षा, प्रतिष्ठा निहित है।

वाई-454/455 कैम्प नं.-1
सुलतानपुरी मार्ग, नांगलोई, दिल्ली-110041
मे.:-9891110040

रसायनों की जहरीली दुनिया

– एलिजाबेथ ग्रासमेन

सन् 1930 के दशक से शुरू हुई रासायनिक होड़ ने लाखों वर्षों की सभ्यता की चूलें हिलाकर रख दी हैं। पिछले आठ दशकों में हम इतने प्रदूषित हो गए कि आज भारत जैसे देश में एक भी नदी साफ सुथरी नजर नहीं आती। यदि गर्भनाल तक में रासायनिक प्रदूषण मिल गया है तो भविष्य क्या गुल खिलायेगा कहा नहीं जा सकता।

हम एक विशाल और अनियोजित प्रयोग के भंवर में फंसे हैं। पिछली शताब्दी में हमने हजारों-हजार ऐसे रसायन निर्मित कर लिए जिनका इससे पहले धरती पर अस्तित्व ही नहीं था। हमने जानबूझकर इस भौतिक विश्व को बदला है और ऐसे अनगिनत उपयोगी उत्पाद बना लिए हैं जिनके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। लेकिन ये रसायन चाही गई उपयोगिता से परे जाकर हमारी दुनिया को बदल रहे हैं। पाया गया है कि इसमें से बहुतेरे हमारे जीवन की आधारभूत जैविक संरचना जिसमें जीन्स, हारमोन भी शामिल हैं, के साथ हमारी महत्त्वपूर्ण जीवन प्रणाली को नुकसान पहुँचा रहे हैं।

हमारी इस जटिल शारीरिक संरचना का जिन रसायनों से साबका पड़ता है, उसके घातक परिणाम अब जन्म के पहले ही प्रभावित करने लगे हैं। इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिल गए हैं कि पर्यावरणीय प्रदूषण अत्यंत जटिल मानव बीमारियों एवं गड़बड़ियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अमेरिका के राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य एवं मानव विकास संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक का कहना है कि सामान्य और लंबी बीमारियों एवं रसायन के जहरीलेपन से सम्बन्धित संकेत मिल गए हैं।

ऐसा कैसे होता है?लोग तो पुरातन काल से अणुओं से छेड़छाड़ करते रहे हैं। लेकिन 1930 के दशक में रसायनविज्ञों ने व्यापक उत्पादन हेतु उत्पादकों को डिजाइन करना प्रारम्भ किया और अपना ध्यान अल्कोहल, सेल्युलोज, मक्का, दूध और स्टार्च से हटाकर रासायनिक पेट्रोलियम पदार्थों की ओर लगाया। विशालकाय तेल एवं गैस उद्योग ने भारी मात्रा में हाईड्रोकार्बन उपलब्धकरवा कर रसायनशास्त्रियों को अणुओं के एक नए संसार से परिचित कराया। इसके परिणामस्वरूप रासायनिक यौगिकों का ऐसा प्रयोग हुआ जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। इस मुहिम ने पीढ़ी दर पीढ़ी तेज गति पकड़ी और प्रत्येक जीवित व्यक्ति को हल्के, न टूटने वाले और लोचदार प्लास्टिक, पानीरोधी कपड़े और ऐसा डिटरजेंट जो कि तेल और ग्रीस भी निकाल देता है, के विश्व में पहुँचा दिया। वैसे ये बहुत थोड़े उदाहरण हैं, जिन्हें आधुनिक रसायन शास्त्र द्वारा अस्तित्व में लाया गया है।

आज अदृश्य रूप से हमारे पूरे शरीर को संचालित करने वाले नानस्टिक बर्तन, चिकनाई न सोखने वाली भोजन पैकिंग, पानी रोधी वस्त्र, पॉलिकार्बिनेट प्लास्टिक, खाने के केन (डिब्बे) बैक्टीरियारोधी साबुन, सनस्क्रीन क्रीम, कीटनाशक, भोजन को न सड़ने देने वाले रसायन, नकली खुशबू, सौंदर्य प्रसाधन, खिलौने और राकेट का ईंधन, सभी तो रसायनों के भरोसे हैं। वैज्ञानिकों को नवजात शिशु की गर्भनाल के खून में 200 प्रकार के रसायन मिले हैं। इसके अलावा दुनियाभर से इकट्ठा किए गए नमूनों में इसी तरह के पदार्थ खून, मूत्र एवं माँ के दूध में भी मिले हैं। ये सब रसायन अपने निर्माण स्थल से बहुत दूर वायु, जल, मिट्टी और वन्यजीवन में पाए गए हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि कुछ

सिंथेटिक रसायन, प्राकृतिक रसायन उत्पादों से इतने अलग हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें किसी दूसरी दुनिया से लाकर यहाँ डाला गया हो।

दुनिया भर में प्रतिवर्ष 40 करोड़ टन रसायनों का उत्पादन होता है तथा इसकी मात्रा में लगातार वृद्धि होने की उम्मीद है। व्यावसायिक तौर पर उत्पादित रसायनों की वास्तविक संख्या का कोई अंदाजा नहीं, लेकिन अनुमान यह है कि एक लाख रसायन बाजार में उपलब्ध है। इसी के साथ प्रतिवर्ष हजारों नए रसायनों का आविष्कार हो रहा है तथा इनमें से अनेक को बिना पूरी जानकारी के बाजार में उतारा जा रहा है। वैसे कई रसायनों ने हमारे जीवन को सुरक्षित भी बनाया है। लेकिन इसने अनेक तरह से मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए खतरा भी पैदा किए हैं। कई रसायन पर्यावरण में बरसों-बरस बने रहते हैं और कई रसायन पौधों और जानवरों में प्रविष्ट हो हमारी भोजन श्रृंखला में प्रवेश कर जाते हैं।

कई रासायनिक उत्पादों के बारे में यह कहा जाता है कि वे हमारी जीवित कोशिकाओं के प्राकृतिक रसायन को प्रभावित नहीं करेंगे। लेकिन ऐसे कुछ रसायन जो पर्यावरण अनुकूल नहीं हैं वे भी लगातार हमारे संपर्क में रहते हैं, जैसे पुनः इस्तेमाल में आने वाले भोजन एवं पेय के डब्बे, भोजन एवं पेय पदार्थों के केन में प्रयोग आने वाली कलई या लाइनिंग। हमें यह भी पता लगा है कि औद्योगिक कारखाने, चिमनियाँ, ड्रेनेज पाइप और कचड़ा फेंकने के स्थान ही रसायनों के संपर्क में आने के स्थान नहीं हैं। हम जो पहनते हैं जिस पर बैठते हैं और सोते हैं और जानबूझकर जिन्हें हम अपनी चमड़ी पर रगड़ते हैं वे भी खतरनाक रसायन हैं। ये जो भोजन हम खाते हैं, पानी या जो कुछ हम पीते हैं, या सांस लेते हैं, में भी रसायन मौजूद हैं। ये हमारे साथ-साथ ध्रुवीय भालू, समुद्री कछुए, घोंघे, मेढक और सील मछली में भी मौजूद हैं। जलीय वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछली शताब्दी में हमारा ग्रह पिछले किसी भी समय की तुलना में रासायनिक तौर पर अलग था। आज ये रसायन हमारे पूरे शरीर के नाजुक अंगों को प्रभावित कर रहे हैं। बच्चों से लेकर बड़े तक सभी में इसको लेकर समस्याएँ खड़ी हो रही हैं। इसका गर्भाधान से लेकर मनोवैज्ञानिक स्तर तक प्रभाव पड़ रहा है। हम जानते हैं कि कुछ रसायन इतने घातक हैं कि उनकी बहुत थोड़ी मात्रा के संपर्क में आने के विध्वंसकारी परिणाम निकल सकते हैं। साथ ही इनके संपर्क में आने से आगे की कई पीढ़ियाँ भी प्रभावित हो सकती हैं।

कुछ रसायन (बीपीए, ट्रिब्यूटिलिन, कुछ विशिष्ट पथालेट्स एवं पनफ्लोरिनेट यौगिक) ऐसे हैं जो कि मोटापे की कोशिकाएं निर्मित करते हैं, जिससे कि जीवन के बाद के वर्षों में मोटापा बढ़ जाता है। वैज्ञानिक संस्थाओं ने इनके खिलाफ आवाज उठाई है और नीति निर्माताओं से कहा है कि वे कम से कम ऐसे रसायनों पर प्रतिबन्ध लगाएं, जिनका शिशुओं पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। साथ ही सुरक्षित उत्पादों के निर्माण की दिशा में कदम उठाएं। हम समय को वापस तो नहीं ला सकते, लेकिन कम से कम ऐसे रसायन बनाने की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं, जो कि मानव जीवन और पर्यावरण के लिए सुरक्षित हों।

– युवा संवाद से साभार

(डेंगू के डंक से रहें सावधान) Dengue fever

एडीज इजिप्टी नामक मच्छर के काटने से कुछ दिनों के बाद व्यक्ति डेंगू बुखार से ग्रस्त हो जाता है। मादा मच्छर एडीज इजिप्टी जब किसी व्यक्ति को काटते हैं, तो उस व्यक्ति के रक्त में डेंगू फैलाने वाले वाइरस प्रवेश कर जाते हैं। रक्त में वाइरस के प्रवेश करने के 4 से 10 दिनों के बाद इस रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। ऐसा नहीं है कि एकबार काटने के बाद वाइरस से संक्रमित मच्छर इस रोग को फैलाने में निष्प्रभावी हो जाता है। वाइरस संक्रमित मच्छर अपने शेष जीवन–काल में लोगों को काटकर उन्हें डेंगू से ग्रस्त करने में सक्षम है। एडीज इजिप्टी मच्छर अधिकतर शहरों के रिहाइशी इलाकों में पनपते हैं। खासकर कंटेनरों में भरे साफ पानी में ये तेजी से पनपते हैं।

काटने का वक्त

एडीज इजिप्टी के संदर्भ में खास बात यह है कि ये रात में न काटकर सिर्फ दिन में ही काटते हैं। आम तौर पर इनके काटने की प्रवृत्ति तड़के सुबह और शाम को धुंधलका छाने के वक्त ज्यादा होती है।

लक्षण

–हड्डियों व जाघों में तेज दर्द, ठंड के साथ तेज बुखार आना, शरीर पर चकत्ते पड़ना और इनमें खुजली होना, शरीर में दर्द, आखों के पीछे वाले भाग में दर्द होना, किसी वस्तु के स्वाद को बदला हुआ महसूस करना, पेट में दर्द और बार–बार उल्टिया होना, पेशाब के स्वाभाविक रंग का बदल जाना या फिर काले रंग का मल होना, नाक या मसूढ़ों से रक्त बहना।

अभी तक वैक्सीन उपलब्ध नहीं

डेंगू से सुरक्षा के लिए अभी तक कोई वैक्सीन ईजाद नहीं हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विभिन्न देशों और चिकित्सा संगठनों से जुड़े विशेषज्ञों को डेंगू से सुरक्षा के लिए वैक्सीन बनाने के लिए तकनीकी सलाह प्रदान करने आश्वासन दिया है और इस सदर्भ में दिशा–निर्देश भी जारी किए हैं। इसी क्रम में विभिन्न विशेषज्ञों के शोध–अनुसंधान जारी हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि निकट भविष्य में डेंगू की वैक्सीन उपलब्ध हो सकेगी।

उपचार

डेंगू बुखार के लिए कोई एक निश्चित इलाज विधि नहीं हैं। विभिन्न लक्षणों के आधार पर इलाज किया जाता है। रोगी के शरीर में पानी की कमी न होने पाए, इसके लिए उसे मुंह से और आईवी के जरिये तरल पदार्थ दिए जाते हैं। बुखार, उल्टिया, पेट दर्द, सिर दर्द और कमजोरी जैसे लक्षणों को दूर करने के लिए दवाएं दी जाती हैं। इसके अलावा रोगी की पल्स रेट, रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा और ब्लडप्रेशर पर निगरानी रखी जाती है।

प्लेटलेट्स ट्रासफ्यूजन

डेंगू बुखार के कारण रक्त में प्लेटलेट्स काउंट गिरने लगता है। जब प्लेटलेट्स काउंट 10,000 से कम हो जाता है, तो उस स्थिति में रोगी को प्लेटलेट्स ट्रांसफ्यूजन किया जाता है। अगर पीड़ित व्यक्ति के शरीर के किसी भाग से रक्तस्राव हो रहा हो, तब भी प्लेटलेट्स ट्रांसफ्यूजन किया जाता है।

रोकथाम

–ड्रम, कंटेनर आदि का पानी सप्ताह में कम से कम एक बार बदलते रहें, पानी को एकत्र करने वाले ड्रमों और कंटेनरों पर ढक्कन जरूर लगाएं, रिहाइशी स्थानों को स्वच्छ रखें, ताकि मच्छर न पनप सकें, दिन के वक्त नमी वाले स्थानों पर न जाएं, क्योंकि इन जगहों पर मच्छर रहते हैं, ऐसे वस्त्र पहनें जिनसे पूरा शरीर ढका रहे, बेकार हो चुके टायर, नारियल के खोल और बोतलों आदि को नष्ट कर दें ताकि इनमें पानी न एकत्र हो सके, मच्छरों को खत्म करने और इन्हें दूर भगाने के लिए क्वायल, स्प्रे आदि अन्य उपायों का इस्तेमाल करें।

– सुरेश आर्य
Suresharya@alliednippon.com

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी आर्यवेश जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री रणवीर सिंह शास्त्री की स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी एवं बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या ने दी श्रद्धांजलि

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी के बड़े भाई श्री रणवीर सिंह शास्त्री जी का गत् 6 अक्टूबर, 2023 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में दिनांक 13 अक्टूबर, 2023 को शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा उनके दिल्ली स्थित निवास द्वारका, दिल्ली में आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या आदि के अतिरिक्त अन्य गणमान्य महानुभाव तथा परिवार के सम्बन्धी एवं हितैषीजन सभा में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए प्रो. विट्ठलराव आर्य ने कहा कि स्व. श्री शास्त्री जी का जीवन अत्यन्त सात्विक एवं पवित्र था, उन्होंने अपने छोटे भाई स्वामी आर्यवेश जी को प्रेरित करके देश और समाज के लिए कार्य करने के लिए समर्पित किया। आज स्वामी आर्यवेश जी पूरे विश्व की आर्य समाजों का नेतृत्व करते हुए बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। शास्त्री जी के जाने से निःसंदेह परिवार एवं समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। वे बचपन से ही आर्य समाज के विचारों से प्रेरित हुए और आर्य समाज महम, जिला–रोहतक के कई वर्ष तक प्रधान भी रहे। ऐसे कर्मठ व्यक्तित्व को मैं अपनी ओर से एवं सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और परमपिता से उनकी आत्मा की शांति की कामना करता हूँ।

श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा कि स्वर्गीय शास्त्री जी से मेरा लगभग 40–45 साल पुराना परिचय था। जब से मैं स्वामी आर्यवेश जी के सम्पर्क में आया तभी से मेरा इनके साथ पारिवारिक रिश्ता बन गया था और मैं परिवार में होने वाली किसी भी कार्यक्रम में सदैव सम्मिलित होता था। शास्त्री जी के साथ अनेक बातों पर विचार–विमर्श तथा वार्तालाभ भी मैं करता रहता था। उनके बड़े सुपुत्र स्व. सुखवीर सिंह से मेरी अत्यन्त आत्मीयता रही और उसके असमय निधन के पश्चात् स्व. शास्त्री जी से मैं निरन्तर जुड़ा रहा। स्वामी आर्यवेश जी प्रायः परिवार के किसी भी सामूहिक समारोह या कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हुआ करते थे किन्तु मैं अवश्य ही हर कार्यक्रम में शामिल होता था। आज उनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती, किन्तु उनके जीवन से प्रेरणा लेकर सभी परिवारजन अपने कार्यों को आगे बढ़ायेंगे तो निश्चित ही वे सदैव जीवित रहेंगे। मैं राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

स्वामी आदित्यवेश जी ने भी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से स्वर्गीय शास्त्री जी को श्रद्धांजलि देते हुए उनके प्रति अपने उद्गार प्रकट किये। उन्होंने कहा कि उनका व्यवहार सदैव पिता तुल्य रहता था और मुझे जब भी उनसे मिलने का अवसर मिला, उन्होंने मुझे सामाजिक जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

बहन पूनम आर्या ने जहाँ स्वर्गीय शास्त्री जी को बेटी बचाओ अभियान की ओर से और अपनी अनन्य साथी बहन प्रवेश आर्या की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं उन्होंने जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में अपने दार्शनिक विचार भी प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि जीवात्मा जब शरीर में आता है तो जन्म और जब शरीर छोड़ता है तो मृत्यु कही जाती है। किन्तु जन्म या मृत्यु आत्मा का नहीं होता यह शरीर का होता है। शास्त्री जी भले ही नश्वर देह छोड़कर चले गये किन्तु वे पुनः जन्म लेकर संसार में अपने कर्मों के अनुसार पुनः अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ करेंगे। जन्म और मृत्यु एक शाश्वत नियम है इसी को समझने से हमारे दुःख कम होते हैं। जब हम इस शाश्वत नियम को स्वीकार कर लेते हैं और समझ लेते हैं तो हमारे परिवार के किसी भी महत्त्वपूर्ण सदस्य के वियोग का कष्ट कम हो जाता है। आज भी परिवारजनों को इसी भाव से उस दिवंगत आत्मा के सम्बन्ध में यह स्वीकार करना होगा कि वे अपना कार्य और दायित्व पूरा करके चले गये, किन्तु अपने पीछे अपनी बहुत सारी अमिट स्मृतियां छोड़कर गये हैं जो हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी। बहन जी ने परिवारजनों के प्रति अपनी सांत्वना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि सभा के उपरान्त परिवार में सबसे बड़े होने के नाते स्वर्गीय शास्त्री जी के छोटे भाई श्री राजवीर सिंह एवं उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। विदित हो कि स्व. श्री रणवीर सिंह शास्त्री जी की अन्त्येष्टि 7 अक्टूबर, 2023 को द्वारका, सैक्टर–19 के श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से की गई थी। घृत एवं सामग्री की प्रचुर मात्रा उनकी अन्तेष्टी में प्रयोग की गई और अस्थियों का चयन करने के उपरान्त अस्थियों एवं उनकी भष्मी को गांव के खेत में जमीन में दबाकर जामुन का एक सुन्दर पेड़ आरोपित किया गया था। शास्त्री जी के सबसे छोटे पुत्र श्री वीरेन्द्र सिंह लन्दन में एक अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी में सेवारत हैं वे अपने परिवार सहित अन्तेष्टि में पहुंच गये थे। उनके मझले पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह ने सभी व्यवस्थाओं को बड़ी कुशलता से संभाला। स्व. शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती आर्या ने भी इस अवसर पर बड़े मजबूत हृदय के साथ अपने पति को अन्तिम विदाई देते हुए सभी परिवारजनों का ढांढस बंधाया। निःसंदेह उनकी इस भूमिका से सभी लोग स्तब्ध थे। स्वर्गीय शास्त्री जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती आर्या अध्यापन के कार्य में सेवारत रहे और सेवानिवृत्त होने के उपरान्त अपने पुत्र के साथ द्वारका नई दिल्ली में रहने लगे थे। यहीं पर उनका देहावसान हुआ।

श्रद्धांजलि सभा में परिवार के अन्य सदस्यों में मुख्यरूप श्री बलराज सिंह अहलावत, श्री कुलदीप सिंह, श्री युद्धवीर सिंह, श्री बबरू भान, श्री सुभाष सिंह, श्री यशवीर सिंह आदि भी उपस्थित रहे। परिवार के अन्य सभी सदस्य एवं महिलाएँ भी कार्यक्रम में पहुंचे। इनके अतिरिक्त श्री विष्णुपाल कोषाध्यक्ष बंधुआ मुक्ति मोर्चा, श्री अशोक वशिष्ठ, श्री रामपाल शास्त्री, मा. नफे सिंह रिठाल, मा. सहीराम एवं मा. जगवीर सिंह गंगानगर महम आदि ने भी स्वर्गीय शास्त्री जी को श्रद्धांजलि दी।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-42415359, 23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।